॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक

अक्टूबर 2019 वर्ष 23, अंक 10 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2075-76 ❑ कुल पृष्ठ 16

ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के स्वर्गीय ट्रस्टी श्री हंसमुख भाई परमार को शत्-शत् नमन

अत्यंत दु:ख का विषय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि टंकारा स्थित ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख भाई परमार जी का आकस्मिक निधन दिनांक 24 अगस्त 2019 हो गया। जहां यह जन्मभूमि ट्रस्ट को एक बहुत बड़ा आघात है वहीं सम्पूर्ण आर्य जगत् में उनके द्वारा जारी सेवाओं के कारण एक आभाव का अनुभव किया जा रहा है। आप अपने युवा काल से ही वैदिक मान्यताओं से ओत-प्रोत थे और आप टंकारा के ही निवासी थे। आपका जन्म महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मस्थान से कुछ ही दूरी पर है। आपके पूर्वज स्वामी दयानन्द के परिवार के सम्पर्क में थे। आपका अकास्मात् इस भौतिक जीवन से चले जाना एक ऐतिहासिक पुरुष का जाना है। आप जहां टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी पिछले 40 वर्षो से थे वहीं आर्य प्रतिनिधि सभा गुजराज के महामन्त्री भी थे। साथ ही स्वराष्ट्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवम् प्रधान पदों पर रहे।

ऋषि जन्मभूमि ट्रस्ट के अधीन नहीं था वह राजकोट स्थित एक व्यापारी की अधीन थी जिसे प्राप्त करने के लिए ट्रस्ट को कई वर्ष लगे। इस उपलब्धि में आपके प्रयासों का भी बहुत बड़ा योगदान था।

आप हमेशा प्रसन्नचित दिखाई देते थे, व्यवहार में अत्यंत मृदुल व विनम्र थे। आपसे जब बातें करते थे तो आप ध्यान से सुनते थे और बहुत ही संक्षिप्त व सटीक उत्तर दिया करते थे। आप एम.पी. दोषी विद्यालय,टंकारा के प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए थे।

समस्त टंकारा परिवार की ओर से उनके अकस्माक निधन पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

- ट्रस्ट मन्त्री रामनाथ सहगल

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व के धनी ऋषिभक्त श्री हंसमुख परमार

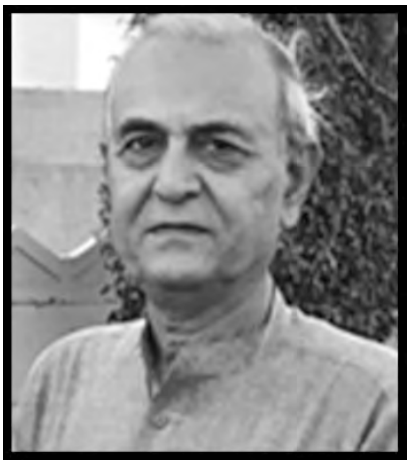

टंकारा ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि है जो संसार के सभी आर्यों के लिए पुण्य भूमि है। आर्यसमाज यद्यपि किसी स्थान विशेष को तीर्थ स्थान नहीं मानता परन्तु टंकारा में ऋषि दयानन्द का जन्म होने से यह विश्व का एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसके प्रत्येक आर्य को दर्शन करने चाहियें। यहां आकर ऋषिभक्तों को एक विशेष सुख की अनुभूति होती है। यही कारण है कि विश्व से बड़ी संख्या में ऋषिभक्त प्रत्येक वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर यहां खिंचे चले आते है। प्रत्येक ऋषि भक्त का यह स्वप्न होता है कि वह जीवन में एक बार टंकारा जाकर ऋषि को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करे। उस स्थान व घर को देखे जहां स्वामी दयानन्द जी वा बालक मूलशंकर का जन्म हुआ था। ऋषि दयानन्द के जीवन से जुड़े सभी स्थानों को देखने की प्रेरणा ऋषि दयानन्द के भक्तों को होती है।

टंकारा में ऋषि दयानन्द के नाम पर एक स्मारक ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास संचालित है। ऋषि दयानन्द के जन्म गृह, जिसका पुनरुद्धार कर नया रूप दिया गया है, इसकी व्यवस्था भी ऋषि दयानन्द जन्मभूमि स्मारक न्यास के द्वारा की जाती है। टंकारा की दूसरी महत्वपूर्ण आर्य संस्था ''आर्यसमाज टंकारा'' है। यह आर्यसमाज आर्यजगत की एक आदर्श समाज वा संस्था है। यहां आर्यसमाज को सुदृण करने सहित आर्यसमाज को जन-जन में पहुंचाने की अनेक योजनायें बनाई गई हैं। आर्यसमाज के अधिकांश पदाधिकारी युवक हैं। समाज की ओर से निर्धनों को खाद्य सामग्री का प्रत्येक माह वितरण किया जाता है और उनके अन्त्येष्टि कर्म भी आर्यसमाज के द्वारा कराये जाते हैं। युवक व युवतियों को संस्कारित करने व उनके जीवन निर्माण के लिये अनेक कार्यक्रम दैनिक, साप्ताहिक व मासिक रूप से किये जाते हैं। आर्यसमाज के सभी सदस्यगण अपने निवास गृहों पर दैनिक अग्निहोत्र यज्ञ भी करते हैं। आर्यसमाज का अपना दो मंजिला भव्य भवन है। आर्यसमाज की इन सभी प्रेरणादायक गतिविधियों की प्रेरणा के स्रोत इस समाज के मंत्री यशस्वी श्री हंसमुख परमार जी थे। आपने ही यहां सभी सदस्यों को दिशा दी जिसका परिणाम आर्यसमाज का एक प्रभावशाली संगठन यहां बना व कार्यरत है। बड़े द:ख से सूचना मिली की उनका निधन हो गया है।

श्री हंसमुख परमार जी का जन्म 12 नवम्बर, 1947 को हुआ था। लगभग 72 वर्ष की आयु में दिनांक 24 अगस्त, 2019 को आपका टंकारा में देहावसान हुआ। आपके जाने से आर्यसमाज टंकारा एवम् महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट जिसके आप ट्रस्टी थे, सहित समूचे आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई है। आप आदर्श ऋषि भक्त थे। ऐसा हमने अनेक बार अपनी टंकारा यात्राओं में आपसे सम्पर्क करके अनुभव किया था। आप का सौम्य चेहरा आपकी मृत्यु के दिन से हमारे सम्मुख बार-बार आ जाता है। आप हमेशा प्रसन्नचित्त दिखाई देते थे। व्यवहार में अत्यन्त मृदुल व विनम्र थे। आपसे जब बातें करते थे तो आप ध्यान से सुनते थे और बहुत ही संक्षिप्त व सटीक उत्तर दिया करते थे। आप एम.पी. दोषी विद्यालय, टंकारा के प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए थे। हमें जीवन का वह दृश्य भी स्मरण है जब दो वर्ष पूर्व टंकारा के ऋषि जन्मभूमि न्यास में सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी पधारे थे और उनको उनका कमरा दिखाने श्री हंसमुख परमार जी उन्हें वहां ले गये थे। हम देहरादून के आचार्य धनंजय और आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री जी सहित भी साथ में थे। कमरे में पहुंच कर स्वामीजी और हंसमुख परमार जी के बीच कुछ देर अनेक विषयों पर वार्तालाप हुआ था। हमने इन दोनों ऋषिभक्तों के वार्तालाप को बहुत रुचिपूर्वक व ध्यान देकर सुना था। परमार जी के विनम्रता एवं सम्मान से युक्त शब्दों को सुनकर हमारा उनके प्रति आदर भाव अत्यन्त बढ़ा था। परमार जी को हमने टंकारा में अनेक कार्याक्रमों का संचालन करते हुए भी देखा था। आपका मन्त्र संयोजन बहुत योग्यतापूर्वक एवं प्रभावशाली रूप में होता था। हमने अपनी सभी यात्राओं में टंकारा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव जो ऋषि बोधोत्सव वा शिवरात्रि के दिन सांयकाल के समय होते हैं, उसमें भाग लिया है। जो ऋषिभक्त बोधोत्सव पर टंकारा की यात्रा पर जाते हैं वह प्राय: सभी टंकारा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भी सम्मिलित होते हैं। इस कार्यक्रम का संचालन मंत्री होने की दृष्टि से परमार जी ही करते थे। अब यह सब अनुभव एक इतिहास बन चुका है। अब हमें न तो आपको देखने का अवसर मिलेगा और न आपसे वार्ता करने व आपको टंकारा न्यास व आर्यसमाज टंकारा में सुनने का।

श्री हंसमुख परमार जी ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास, टंकारा के न्यासी भी थे। टंकारा के स्थाई निवासी होने से आप न्यास के अनेक कार्यों को देखते थे तथा बोधोत्सव पर आयोजित एकाधिक कार्यक्रम का संचालन भी करते थे। न्यास परिसर में भ्रमण करते हुए आप अनेक बार यत्र तत्र दिखाई देते रहते थे जिसका कारण आप का वहां आगन्तुकों पर ध्यान रखना व उनकी समस्याओं को दूर करना होता था। श्री परमार जी गुजरात राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री भी थे। इस दायित्व के कार्य का निर्वहन भी आपने बहुत योग्यतापूर्वक किया था। आपका एक गुण यह भी था कि आपके चेहरे पर सदैव प्रसन्नता के भाव रहते थे ऐसा व्यक्तित्व अपनी आभा बिखेर कर व लोगों को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित व आकर्षित करते हुए ईश्वर की प्रेरणा से किसी अन्य स्थान पर अपने व्यक्तित्व के अनुरूप भावी माता-पिता के यहां पुन: जन्म लेने के लिये चला गया है। हम आशा करते हैं कि इस जन्म के संस्कारों के परिणाम से वह पुन: आर्यसमाजी बनेंगे और आर्यसमाज की सेवा करते हुए ऋषि मिशन को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे।

आर्यसमाज के प्रमुख विद्वान श्री भावेश मेरजा जी ने इस लेख पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा है कि श्री हंसमुख भाई परमार का योगदान वस्तुतरू अति सराहनीय था, विशेष रूप से गुजरात सौराष्ट्र प्रदेश में।

ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि वह श्री हंसमुख परमार जी की आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे। ईश्वर आर्यसमाज को हंसमुख परमार जी जैसे ऋषिभक्त बड़ी संख्या में प्रदान करें जो विश्व में वेद प्रचार करने का स्वप्न संजोय हुवे हों और देश देशान्तर में वेद प्रचार कर ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को पूरा करने का प्राणपण से पुरुषार्थ करें।

-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

जीवन की शाम ना होने दें

आप नौकरी से रिटायर हो चुके हैं या फिर आपने अपने व्यवसाय की जिम्मेदारियां अपने पुत्रों को सौंप दी हैं। सफेद बाल और परिपक्वता ने आपको गम्भीर तथा शान्त बना दिया है एक विदेशी विचारक के अनुसार अब आप जीवन के उस स्थान की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ आपको आपकी मेहनत के रसीले फल मिलने आरम्भ हो रहे हैं। जब आपका पहला नाती-पोता इस संसार में आ जाये तो आप समझें कि आप जीवन के सांध्यकाल की ओर अग्रसर हैं या पहुँच चुके हैं उनको देखकर अब आप संतोष का अनुभव करने लगे हैं।

यही समय है जहाँ आप अपने नाती पोतों के द्वारा अपने बचपन को दुबारा पकड़ सकते हैं अगर दूसरे शब्दों में कहूँ तो यही नाती पोते आपके शाश्वत जीवन के पासपोर्ट हैं। आयु के इस पड़ाव पर पहुँचते-पहुँचते आप विभिन्न परिस्थितियों से जूझते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हुए पूर्ण रूप से अनुभवी हो चुके हैं। यही वह समय है जब आप अपने नाती पोतों में उस अनुभव के आधार पर उन्हें संस्कारित कर सकते हैं। उन्हें अधिक से अधिक समय दें ताकि आपके न रहने पर भी वह आपकी धरोहर के रूप में आपकी याद बनायें रखें। ऐसा कई बार देखने सुनने में आया है कि यही बच्चे अपने परिवार में एवं मित्रों में यह कहते हुये पाये गये हैं कि हमारे दादाजी अथवा नानाजी ऐसा कहा करते थे/किया करते थे उनके द्वारा आपकी प्रेरणाएँ असंख्य बाल मित्रों तक पहुँच रही होती हैं या यह कहें कि नाती पोते आपके दूरदर्शन अथवा रेडियो हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कवि नजीर ने सही लिखा है-

चल ऐ नज़ीर, इस तरह से कारवाँ के साथ,
जब तू न चल सके तो तेरी दास्ताँ चले॥

मुझे ऐसा अनुभव तब हुआ जब अपने पिछले माह के अमेरिका प्रवास के अन्तर्गत मैं स्वयं दौबारा दादा बना। (पुत्र/पुत्रवधू अभिषेक एवं स्तुति ने पुत्र अरहन राम के बाद अब पुत्री सान्वी को जन्म दिया)

आर्यसमाज को आपकी इसी शाम में अधिक आवश्यकता है।

यही समय है जब आप आर्यसमाज को अपना अधिक से अधिक योगदान दे सकते हैं। मत इन्तजार कीजिये कि कोई आर्यसमाज का प्रधान या मंत्री आपको आमंत्रित करने आयेगा। आप स्वत: आर्यसमाज में पहुंच जायें और अपनी योग्यताओं के अनुसार अपनी सेवाएं देना आरम्भ कर दें। जिस प्रकार आप रिटायर होने से पहले अपने कार्यालय/व्यवसाय पर जाने हेतु समय पर तैयार हो घर से निकल पड़ते थे ठीक उसी प्रकार आप आर्यसमाज के लिये तैयार होकर चल पड़ें। यदि आपके निकटवर्ती आर्यसमाज में कार्यालय नहीं है तो वहां जाकर कार्यालय बनाने के लिये प्रेरणा दें। अगर आर्य समाज में सेवा के कार्य नहीं हो रहे हैं तो होम्योपैथिक डिस्पेंसरी, छोटा पोली क्लीनिक, बाल लाइब्रेरी, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, स्वाध्याय केन्द्र इत्यादि प्रारम्भ करने की प्रेरणा दें। अगर आपके प्रयास सफल न हों तो किसी निकटवर्ती आर्यसमाज में जहाँ ऐसी गतिविधियाँ चल रही हों तो वहाँ अपनी नि:शुल्क सेवाएँ दें। इससे दो प्रकार से आपको लाभ होगा। एक तो आपमें उसी प्रकार की फुर्ती रहेगी जैसी कि आपमें पहले थी, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, शरीर गतिशील रहेगा, जीवन के इस मोड़ पर 70 प्रतिशत व्यक्ति रोगी इसी कारण होता है कि अकस्मात् शरीर अत्यधिक सक्रिय से निष्क्रिय हो जाता है, शरीर को निष्क्रय न होने दें। दूसरा लाभ आपको आत्मिक और आध्यात्मिक होगा। जीवन में आप गर्व से कह सकेंगे कि मैं जीवन भर केवल अपने लिये या अपने परिवार के लिये ही जीविकोपार्जन हेतु ही जीवित नहीं रहा अपितु मैंने इस समाज एवं राष्ट्र को भी अपनी सेवाएं दी हैं। मैं यहाँ यह कह दूँ कि यह हर व्यक्ति का कर्तव्य भी है। आर्यसमाज के क्षेत्र में कितनी ही ऐसी संस्थाएं हैं जो सेवा कार्य कर रही हैं उनमें आप जैसे व्यक्तियों की अत्यधिक आवश्यकता है।

आर्यसमाज बिखरे हुए ढंग से अपने आर्यसमाज के एक या दो कमरों में बहुत छोटे स्तर पर सेवा कार्य कर रहा है जबकि आज की आवश्यकता संगठित हो एक बहुत बड़े स्तर पर सेवा कार्य करने की है। हर शहर में वहाँ की स्थानीय प्रतिनिधि सभा अथवा संगठित रूप से कुछ आर्यसमाजें मिलकर एक हस्पताल का संचालन करें वह भी उच्च स्तरीय मशीनों एवं उपकरणों से लैस हो और इसमें सेवाएं न्यूनतम से न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध हों, मुफ्त दी गई सेवाएं उच्चस्तरीय नहीं होतीं। ऐसी धारणा लोगों में बन गई है।

कई शहरों और कस्बों में स्वामी दयानन्द के नाम से सरकारी हस्पताल चल रहे हैं जो हम आर्यों को प्रसन्न करने हेतु कभी स्थानीय विधायक अथवा सांसद उसे स्वामी दयानन्द का नाम दे देते हैं। ऐसे अस्पतालों में सुविधाओं के नाम पर कुछ भी नहीं है और व्यवस्थाएं इतनी बदतर हैं कि व्यक्ति वहाँ स्वस्थ होने हेतु नहीं बल्कि रोगी होने जाता है। ऐसा ही एक हस्पताल दिल्ली के शाहदरा में नगर निगम द्वारा संचालित है जिसकी दयनीय स्थिति के बारे में पंजाब केसरी के दिल्ली संस्करण में 17 नवम्बर 2003 को समाचार प्रकाशित हुआ जिसकी मुख्य पंक्तियाँ थीं 'दयानन्द अस्पताल जहाँ भला चंगा आदमी भी बीमार हो जाये'। यह पढ़कर मन में इतनी पीड़ा हुई कि या तो इसमें स्वामी दयानन्द का नाम नहीं लगा होता यदि दयानन्द का नाम जुड़ा है तो क्यों न हम देव दयानन्द के सेनानी इसको स्वयं चलाने हेतु नगर निगम से ले लेते अथवा स्वयं वहाँ जा जिस प्रकार की भी सेवाएं देने की आवश्यकता हो हम स्वयं दें। मुझे पूर्ण आशा है कि नगर निगम को हमारी सेवाएं लेने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

इसी प्रकार प्रत्येक शहर में आर्यसमाज मार्ग अथवा आर्यसमाज के महापुरुषों के नाम से असंख्य मार्ग होंगे। आर्य महापुरुषों के नाम से लगे पत्थर टूटे होंगे या जीर्ण अवस्था में होंगे। किसी आर्यसमाज का ध्यान इस ओर नहीं जाता कि हम स्वयं ही उसे ठीक करा दें। उस मार्ग के प्रत्येक बिजली के खम्भे पर वर्ष भर ओ३म् ध्वज लगे रहें क्या ऐसा सम्भव नहीं है, इससे प्रचार तो होगा ही आर्यसमाज की शोभा भी बढ़ेगी। आइए, आप सभी जीवन की उस शाम पर पहुँचे हुए व्यक्तियों का खुले हृदय से स्वागत है, आर्यसमाज में और आर्यसमाज के अधिकारियों से विनम्र प्रार्थना है कि ऐसे सभी आर्य विचारधारा के व्यक्तियों को आर्यसमाज में सेवा कार्य करने हेतु पूर्ण सहयोग दें।

अजय टंकारावाला

धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता क्या, क्यों और कैसे?

एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

सामाजिक सजगता के लिए प्रख्यात
शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्‌बोधन

38 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों तथा रेजिडेंट वेलफेयर एसोसियेशन्स (दक्षिण दिल्ली) का एक संयुक्त प्रयास

दिनांक 13 अक्टूबर 2019 (रविवार) सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थान : आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी–ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

- क्या आप जानते हैं कि आपके भारत देश का संविधान, धर्मनिरपेक्ष सिद्धांत पर आधारित है?
- धर्मनिरपेक्षता – क्या, क्यों और कैसे?
  - एक छल या आवश्यकता?
  - एक धोखा या जरूरत?
- क्या हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है?
- धर्मनिरपेक्षता का असली स्वरूप क्या है?
- क्या धर्मनिरपेक्षता सबसे बड़ा सामाजिक मूल्य है?
- कोई इन्सान धार्मिक बने या धर्मनिरपेक्ष?
- क्या अपने–अपने धर्म का अनुसरण करते हुए धर्मनिरपेक्ष रहा जा सकता है?
- धर्म आखिर है क्या?
- क्या धर्म, रिलीजन और मजहब में कुछ अन्तर है?
- क्या धर्मनिरपेक्ष होना राष्ट्र का कर्त्तव्य है या समाज का या व्यक्ति का?
- राज्य और समाज किस तरह और किस सीमा तक धर्मनिरपेक्ष रह सकते हैं?

इत्यादि गहरे और जरूरी सामाजिक प्रश्नों पर विचार–परिचर्चा का आयोजन किया गया है, जिसमें आप सादर आमन्त्रित हैं। आप जैसे विचारशील जनों की उपस्थिति इस आयोजन को अधिक सार्थक बनाएगी।

संगोष्ठी अध्यक्ष

स्वामी प्रकर्षानन्द
– प्रमुख, चिन्मय मिशन, 89, लोधी रोड, नई दिल्ली

पैनल के सदस्य

डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
– *अध्यक्ष–एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान*
– *पूर्व सांसद (राज्यसभा)*
– *पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा, राजस्थान*

डॉ. वागीश आचार्य
– *प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश*

डॉ. मणीन्द्र नाथ ठाकुर
– *प्रोफेसर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली*

डॉ. विनय विद्यालंकार (उद्‌घाटन सम्बोधन)
– *प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (संस्कृत) राजकीय पी जी कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल*
– *प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड*

आशीर्वाद : **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**–प्राचार्य, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली, **श्रीमती संतोष मुंजाल**–हीरो ग्रुप

मुख्य अतिथि : **डॉ अशोक के. चौहान**–संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान, तथा चेयरमैन, ए.के.सी. ग्रुप
डॉ अमिता चौहान –चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स

विशिष्ट अतिथि : **श्रीमती शिखा राय**–पूर्व अध्यक्षा, स्थाई समिति, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम

विशेष आमंत्रित : **श्री रामनाथ सहगल, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुनील कान्त मुंजाल, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री अजय सहगल, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री मनीष विदेह, श्री नितिन्जय चौधरी, श्री गुनमीत सिंह।**

❖ कृपया अपना अग्रिम पंजीकरण करने के लिए **श्री अजय कुमार (9911111989), श्री सुरेन्द्र प्रताप (9953782813), कर्नल गोपाल वर्मा (9811121242),** से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। ❖ कृपया 3:15 बजे तक अपना स्थान ग्रहण करें। ❖ ऑडिटोरियम परिसर में पार्किंग की समुचित व्यवस्था है।

❖ इस कार्यक्रम के लिये कृपया "आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1" को उदारता पूर्वक सहयोग दें। आर्य समाज कैलाश जी.के.–1 को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80–जी(5) के अंतर्गत आयकर छूट के योग्य है।

संयोजक : **श्री राजीव चौधरी (9810014097)**

संयुक्त आयोजक : (1) ग्रेटर कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (जीकेआरए) (2) रेजिडेंट वेलफेयर सोसाईटी, एस–ब्लॉक जी.के.1 (3) रेजिडेंट वेलफेयर सोसाईटी, ई–ब्लॉक जी.के.1 (4) भारत विकास परिषद, दक्षिण दिल्ली (5) वैश्य सभा दक्षिण दिल्ली (6) कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (7) कैलाश ट्रेडर्स एसोसिएशन (8) ग्रेटर कैलाश क्षेत्र विकास समिति (9) कैलाश वीमेन रेजिडेंट एसोसिएशन (10) अग्रवाल सभा जी.के.2 (11) सीनियर सिटिजन एसोसिएशन जी.के.1 (12) रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन ईस्ट ऑफ कैलाश (13) न्याय भूमि (एनजीओ) (14) कॉन्फेडरेशन ऑफ सीनियर सिटिजन्स एसोसिएशन ऑफ दिल्ली (15) दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल (16) आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1 (17) आर्य समाज ग्रेटर कैलाश–2 (18) आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी (19) आर्य समाज लाजपत नगर (20) आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव (21) आर्य समाज कस्तूरबा नगर (22) आर्य समाज कालकाजी (23) आर्य समाज ग्रीन पार्क (24) आर्य समाज मदनगीर (25) आर्य समाज मस्जिद मोठ (26) आर्य समाज अमर कालोनी (27) आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश (28) आर्य समाज संत नगर (29) आर्य समाज गोविंद पुरी (30) राधा कृष्ण मन्दिर जी.के.1 (31) श्री सनातन धर्म मन्दिर सभा जी.के. 2 (32) महावीर जी मन्दिर (पहाड़ीवाला) जी.के.1 (33) शिव मन्दिर एस–ब्लॉक जी.के.1 (34) श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर कालकाजी (35) सनातन धर्म सभा–श्री राधा कृष्ण मन्दिर व राम मन्दिर ईस्ट ऑफ कैलाश (36) गुरुद्वारा गुरूसिंह सभा जी.के.1 (पहाड़ीवाला) (37) आर्य समाज हौज़ खास (38) सर्व सम्मान।

मीडिया प्रायोजक

विराट वैभव

उदात्त जीवन का आधार : संस्कार

❒ डॉ. धर्मवीर सेठी

संस्कृतः देवभाषा, संस्कारः, देवभाषा ज्ञान का प्रतिफलः, संस्कृतिः संस्कार का व्यावहारिक पक्ष और सांस्कृतिक, उस संस्कृति का मंचन। वस्तुतः ये सभी शब्द और भाव परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। यह वाक्य प्रायः सुनने को मिलता है कि 'अमुक बालक के व्यवहार को देख कर पता चलता है कि उसके माता-पिता ने उसे कितने अच्छे संस्कार दिये हैं। बात सही है क्योंकि **'माता निर्माता भवति'**-माँ ही तो श्रेष्ठ बालक का निर्माण करने वाली होती है। शिवाजी का प्रसंग आए तो जीजाबाई को अवश्य याद किया जाएगा। अभिमन्यु की घटना के साथ उसकी माँ सुभद्रा का स्मरण अनायास हो जाएगा। राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने के लिए न्यौछावर होने वाले वीर, धार्मिक क्षेत्र के धर्मगुरु, समाज कल्याण के लिए अग्रणी एवं अन्य युग-पुरुष जो भी हों, उनके पीछे किसी न किसी रूप में मातृ-शक्ति की प्रेरणा रही है। शायद इसलिए वेदोक्त सोलह संस्कारों में प्रथम तीन संस्कार तो माँ की कोख से ही सम्बन्धित है, वहीं से उदात्त स्वभाव वाली सन्तान का निर्माण आरम्भ होता है।

यही आचरण की, संस्कार की पक्की नींव हैं। भवन (मानव देह) अपने आप आलीशान बनेगा और उसे 'सुसंस्कृत' की संज्ञा से अलंकृत भी किया जाएगा। महाभारत में मानव जन्म के महत्व को इन शब्दों में आंका गया है-

न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्

अर्थात् मनुष्य से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ है ही नहीं। महाकवि तुलसीदास ने तो यहाँ तक कह दिया-

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थहिं गावा॥

मनुष्य जन्म अनेक पुण्यों का फल है। परा-शक्ति के बाद इन्सान ही जगत् का संचालक है।

इस दुर्लभ, अद्वितीय शरीर का निर्माण करने हेतु माँ का दायित्व और भी बढ़ जाता है। अस्तु! उन सोलह संस्कारों में प्रथम तीन अर्थात् **गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन** तो बालक गर्भावस्था में रहने पर ही सम्पन्न किये जाते हैं। माँ की सोच, उसके आचरण, खान-पान सबका प्रभाव कोख में पलने वाले बच्चे पर पड़ता है।

फिर होता है जन्म**: जातकर्त संस्कार।** यदि शास्त्रोक्त विधि से सभी संस्कार निष्पन्न हो तो बालक पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। परन्तु खेद इस बात का है कि संस्कार के मर्म को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया जाता है। पाँचवाँ संस्कार है **नामकरण।** कितना सुन्दर विधान है इस संस्कार को मनाने का। पिता बालक की नासिका-द्वार से बाहर निकलती हुई वायु (श्वास) का स्पर्श करके पूछता है-

'कोऽसि, कतमोऽसि, कस्यासि, को नामासि'

अर्थात् तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, किसके हो और तुम्हारा नाम क्या है? फिर उसे एक विशिष्ट नाम दिया जाता है। शास्त्र कहता है कि नाम सार्थक होना चाहिए। नाम के अनुकूल यदि उसका आचरण भी हो, तो 'सोने पे सुहागा'।

सूची में छटा संस्कार है **'निष्क्रमण'** अर्थात् बालक को घर के बाहर जहाँ वायु, स्थान शुद्ध हो, वहाँ भ्रमण कराना, घुमाना। वस्तुतः इससे होता है सूर्य की प्रथम रश्मियों से बालक का स्पर्श। **'अन्नप्राशन'** सातवां संस्कार है। जो बालक को अन्न पचाने की शक्ति के लिए किया जाता है।

' चूड़ाकर्म' अर्थात् प्रचलित **'मुण्डन'** संस्कार तदनन्तर आठवाँ संस्कार है। उत्तरायण काल, शुक्ल पक्ष में जिस दिन आनन्द-मंगल हो, उस दिन प्रायः संस्कार को करने का विधान है। बालक के लिए 'कर्णवेध' संस्कार में कान और नासिका छिदवाने का विधान है जिसे जन्म से तीसरे या पाँचवे वर्ष में सम्पन्न कराया जाता है। **'ओं भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा'** कितना सटीक मन्त्र है।

और दसवाँ संस्कार है **'उपनयन'** जिसे **'यज्ञोपवीत'** संस्कार भी कहा जाता है। वस्तुतः इसके तीन धागे मातृ ऋण, पितृ ऋण और आचार्य ऋण की स्मृति को सदा बनाए रखते हैं 'उप' अर्थात् समीप और 'नयन' अर्थात् होना या ले जाना। आचार्य के समीप अवस्थित रहना। इसलिए सम्भवतः इसके बाद का संस्कार है **'वेदारम्भ'**। वेद का अर्थात् ज्ञानोपार्जन का श्रीगणेश। ध्यान रहे ज्ञान की कोई सीमा नहीं। **'समावर्त्तन'** संस्कार में ब्रह्मचर्यव्रत, साङ्गोपांग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ-विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त कर गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ घर की ओर आना होता है।

तेरहवाँ संस्कार है 'विवाह संस्कार'। इसे 'पाणि-ग्रहण' भी कहा जाता है। इस संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि 'संस्कारित' सन्तानें यहीं से पैदा होती हैं। ब्राह्मण और संन्यासी इन्हीं गृहस्थियों के द्वार पर ही आते हैं 'भिक्षां देहि' इन्हीं के द्वार पर बोला जाता है। वस्तुतः गृहस्थाश्रम वालों का समाज के प्रति विशिष्ट दायित्व बन जाता है। पति-पत्नी का परस्पर समर्पण इस आश्रम को और सुदृढ़ बनाता है। 'Husband' हस्तबन्ध का ही पर्याय है।

फिर बारी आती है **'वानप्रस्थ'** संस्कार की। इसे तीसरा आश्रम भी कहा जाता है। ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के बाद। विधान यह है कि जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे अर्थात् जब गृहस्थी पौत्र वाला बन जाए तो उसे वन की ओर चलने की तैयारी करनी चाहिए। शास्त्र के अनुसारः

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेद्, गृही भूत्वा वनी भवेत्।
वनी भूत्वा प्रव्रजेत्॥ -शतपथ ब्राह्मण।
व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ (यजुः 19/30)

50 से 75 वर्ष की आयु का काल वानप्रस्थ कहा जाता है। -**'जीवेम शरदः शतम्'** के अनुसार चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-25, 25 वर्ष की अवधि के निर्धारित किये गये हैं। जब गृहस्थ वानप्रस्थ होने की इच्छा करे तब अग्नि-होत्र को सामग्री सहित लेकर ग्राम से निकल जंगल में जितेन्द्रिय होकर निवास करे-

अग्निहोत्र समादाय गृह्यं चाग्निपरिच्छदम्।
ग्रामादरण्यं निःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ (मनु. अ. 6)

क्या ही अच्छा हो कि परिवार में रहते हुए भी मुखिया वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करे।

पन्द्रहवाँ संस्कार है 'संन्यास' (संन्यास आश्रम) जिसमें संन्यासी के महत्वपूर्ण कर्त्तव्य की इस प्रकार विवेचना की गई हैः

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥

यजु. 40/16

हे परमात्मदेव! मुझे सुपथ पर ले चलो। मैं बार-बार इसी की याचना करता हूँ।

और सोलहवीं सीढ़ी है **'भस्मान्तं शरीरम्'** (यजुः 40/15) अर्थात् **'अन्त्येष्टि'**। इन सोलह संस्कारों की संक्षिप्त चर्चा के उपरान्त वानप्रस्थ संस्कार (आश्रम) पर थोड़ा और विचार करने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार व्यक्ति जब आयु में बड़ा होने लगता है तो उसे प्रौढ़ की संज्ञा दी जाती है। अंग्रेजी में इसका पर्याय है (Matured)। सरकार की ओर से आयु की दृष्टि से वरिष्ठ नागरिक (Senior Citizen) को कुछ सुविधाएँ अवश्य दी जाती हैं परन्तु क्या आयु में बड़ा होने से उसमें बड़प्पन (Maturity) आ जाता है। Seniority और Maturity दो अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। जो आयु में वरिष्ठ हो उसमें बड़प्पन भी हो यह आवश्यक नहीं और इसी प्रकार बड़प्पन के गुण को धारण करने वाला आयु में भी बड़ा हो, यह अनिवार्य नहीं। फ़ारसी में एक कहावत है:

बुजुर्गी ब अकल अस्त, न ब साल।
तवानगी ब उमर अस्त, न ब माल॥

Maturity is the outcome of intelligence and not years,
Seniority is because of age, not riches.

बड़प्पन में ही जीवन का सुख और आनन्द है।

प्रौढ़ संस्कार की बात करें तो उस व्यक्ति में Matured Person जैसा व्यवहार दिखना चाहिए न कि Seniority का। प्रौढ़ तो मार्ग दर्शक होता है, अपने अनुभवों के आधार पर वह समाज के हितार्थ कुछ कर गुजरने की चाह लिए रहता है। यदि उसे समाज और परिवार का सिरमौर कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। 'स्व' का त्याग और 'पर' की ओर बढ़ना ही प्रौढ़ता है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना को अपनाने से निराशा नहीं होगी।

संस्कृत में एक कहावत है-

न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धाः।
वृद्धाः न ते यो न वदन्ति धर्मम्॥
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,
न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्॥

अस्तु! प्रौढ़ व्यक्ति को सत्संग, स्वाध्याय, सेवा, परोपकार, दान आदि से अपने जीवन को सुखी, शान्त और सन्तुलित बनाना चाहिए इसी से जीवन में समरसता भी आएगी। निराशा दूर होगी और आत्मिक शक्ति बढ़ेगी। प्रौढ़ व्यक्ति का यही कर्तव्य-पथ है:

संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः।

इसलिए आइए। हम वरिष्ठ (Senior) न बनकर प्रौढ़ (Matured) बनें। नर सेवा हमारी वरिष्ठता को प्रौढ़ता में परिवर्तित कर यह सीख देती है कि सेवा मात्र उपकार नहीं अपितु समाज के प्रति आभार व्यक्त करने का एक माध्यम है।

किसी शायर ने ठीक ही कहा है-

ये शामे जिन्दगी इसे हंस के गुज़ारिए।
रस्ता है बड़ा कठिन, मगर हिम्मत न हारिए।

- कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर ''डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार'' उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र- श्री आचार्य रामदेव
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा,
राजकोट-363650, गुजरात। दूरभाष न. 02822-287756

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

शिवराजवती आर्या
(उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

राष्ट्र पुरुष–श्रीराम और माता कैकेयी

❒ मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

महाभारत में 'आर्य' शब्द के संबंध में इस प्रकार कहा गया है
शान्ततितिक्षर्दान्तश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालु नम्रश्च आर्यस्याहढ़ मिर्णमी।

पदार्थ–शांतः=शांति से परिपूर्ण। तितिक्ष=अपार सहिष्णु। दान्तः=मन का स्वामी। सत्यवादी= जैसा मन में हो, वैसा ही वाणी से बोले जो बोले तदनुसार आचरण। कर्म करे, सत्यार्थी जितेन्द्रिय=इन्द्र, इन्द्रियों का शासक। दाता=दानशील, दयालु=कृपा और न्याय कारक। नम्रता=सक्षम होने पर भी विनम्र और मीठा व्यवहार करने वाला।

व्याकरण की दृष्टि से ऋ गतौ से' ऋहलोर्ण्यत्' इस सूत्र के अनुसार ण्यत् प्रत्यय करने पर 'आर्य' शब्द बनता है। इसे कुल,'शील, दया, दान, आदि परिभाषित किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त आठ गुणों को धारण करने वाले को आर्य कहा है। यह श्रेष्ठतम है ऋग्वेद 7.63.5 में स्पष्ट कहा है–**इन्द्र वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** परम पिता परमात्मा का आदेश है–आलसी मत बनो, वैदिक कर्मों के करने कराने वाले बनो। कंजूस, स्वार्थी, पापियों को परे हटा लें, सारे संसार को वेदानुकूल चलाने वाला आर्य, परमेश्वर का भक्त होता है। सारे संसार को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर स्वयं प्रथम श्रेष्ठ आर्य बनो।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को आर्य श्रेष्ठ पुरुष इसीलिए कहा जाता कि क्षत्रिय कुल (सूर्यवंश) में जन्म लेकर, सम्राट दशरथ के वैभवपूर्ण परिवेश में भी रहकर भी उनमें आर्यत्व के सभी गुण विद्यमान थे। इनकी माता 'कौशल्या' भी आर्य परिवार की सुशील और धार्मिक मनोवृतिं वाली थी। विवाह के पूर्व इन्होंने राजा दशरथ के सम्मुख ऋषिकाओं जैसे विचार प्रस्तुत किये थे। वे प्रेय मार्ग की अपेक्षा श्रेय मार्ग की अनुयायी थी। विवाहित होने के पश्चात भोगवाद को तिलाञ्जलि देकर केवल एक ही संतान को जन्म देकर अपने अभिवचन का निर्वाह किया था। ऐसी ऋषिका सत्य श्रेष्ठ माता का पुत्र अपने श्रेष्ठतम प्रारब्धों के कारण जन्म लेने के पश्चात 'आर्य' ही बनेगा। एक बार प्रसंगवश महर्षि वाल्मीकि कि जी ने घुमक्कड़ नारदजी से सहज ही पूछ लिया– इस समग्र संसार में इन गुणों को धारण करने वाला कौन है? 1. संसार में गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने वक्ष में दृढ़ पुरुष कौन है? 2. सदाचार से युक्त, सर्व प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान, सामर्थ्यशाली और देखने में सबसे सुन्दर पुरुष कौन है? जिसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है? 3. जो तपस्वी तो हो, किन्तु क्रोधी न हो। मन्यु गुणधारक हो। 4. तपस्वी तो हो परन्तु, ईष्यालु न हो। उसके मुख मण्डल पर आभा हो। 5. दया, अक्रोध आदि गुण होते हुए भी जब रोष आ जाये तब जिसके सामने देवजन भी कांपने लगे।

इन पांचों प्रश्नों को सुनकर देवराज नारद भी सोच में पड़े गये। उनके मस्तक पर भी बल पड़ गये। कुछ समय तक मौन रहकर, गहरे चिन्तन के पश्चात नारदजी ने महर्षि बाल्मीकि को यह उत्तर दिया–अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुआ 'राम' नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज्य करता है, वह उन सब गुणों से युक्त है जिनका आपने उल्लेख किया है। हमारे विद्वान पाठकों को यह जानकर आश्चर्य मिश्रित हर्ष होगा कि महर्षि वाल्मीकि ने अपनी 'रामायण' में उपर्युक्त सर्वप्रश्नों का विस्तार से उत्तर दिया है। उन्होंने रामायण संस्कृत भाषा में लिखी है।

वस्तुतः राम विविध व्यक्तित्व धारण करने वाले व्यक्ति थे। उनमें कुछ ऐसे भी महानगुण थे, जो सामान्य राजा या सम्राट में नहीं पाये जाते। वे ऐसे वीतराग व्यक्ति थे, जिन्हें स्थित–प्रज्ञ ही कहा जा सकता है। राज्याभिषेक हेतु बुलाये गये और वन के लिए किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार के संबंध में महर्षि वाल्मीकि ने कहा है–

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्य स्वल्योऽप्याकार विभ्रम॥

अर्थात्–राम का व्यक्तित्व इतना निस्पृह था कि राज्याभिषेक हेतु बुलाये गये और वन के लिए विदा किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी असर नहीं देखा। इस श्लोक का महत्व इसलिए भी है कि राज्याभिषेक के समाचार सुनकर राम के मुंह पर न तो विशेष प्रसन्नता, मुस्कारहट तथा क्रांति थी औ जब माता कैकेयी ने राजा की ओर से उन्हें चतुर्दश (14) वर्ष के लिए वनवास तथा भरत को राज सिंहासन पर बैठाने की बात कही, तब इन दोनों बातों को सुनने के पश्चात् राम के मुंह मण्डल पर न तो क्रोध, आवेश तथा क्रोध के कारण आंखे लाल–लात दिखाई न पड़ी। साथ ही वन गमन तथा चतुर्दश वर्ष जैसी लम्बी अवधि को सुनकर उन्हें न लोभ सताया और न ही की कीर्ति (चमक) ही कम हुई। उन्होंने अपने दोनों निश्चय पलकें झुकाकर तथा माता कैकेयी को प्रणाम कर राज महल से प्रस्थित हो गये।

कवि महर्षि वाल्मीकी का यह कितना सुन्दर, सूक्ष्म तथा यथार्थ चित्रण है। क्योंकि हृदय के विषाद या प्रसुद की तरंगों के अनुसार ही उसका भाव मुख मण्डल पर तत्काल झलकने लग जाता है। चेहरा ही हृदय का दर्पण होता है।

भारतीय हिन्दी साहित्य तथा संस्कृत ग्रंथों में वाल्मीकि रामायण का इस कारण सर्वाधिक महत्व है कि राम के हजारों वर्ष पूर्व महर्षि अगस्त्य दक्षिण की ओर वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करने व्दीप–द्वीदपांतरों में गये थे। इतनी लम्बी अवधि के पश्चात राम ने उत्तर से दक्षिण तक, हिमलय से लेकर सुदूर विन्ध्याचल पर्वत–कारामंडल कन्याकुमारी तक भारत को एक करने का प्रयत्न किया था। राम का यह अभियान सामरिक नहीं किंतु सांस्कृतिक था। तत्कालीन भारत से लेकर गोदावरी नाशिक–महाराष्ट्र तक भारतीय संस्कृत विद्यामान थी। इसके पश्चात् इसके दक्षिण में रस–संस्कृति या राक्षस–संस्कृति–भोगवादी संस्कृति और अनार्यसभ्यता व्याप्त थी। रावण, बालि आदि इसके प्रमुख स्तम्भ थे। बालि भोग–विलास में निमग्न होकर अपने अनुज सुग्रीव का शत्रु बन गया था। इधर जटायु आदि छोटे, छोटे वैदिक संस्कृति के अनुयायी थे तथा राजा दशरथ के पुराने मित्र थे।

राम कथा में एक मोड़ कैकयी के कारण आ गया। राम–वन गमन में सीता तथा लक्ष्मण के कारण एक नया अध्याय जुड़ गया। ताड़का और शुर्पणखा सीता के अपहरण मारीच का विशेष सहयोग रहा। राम–रावण के युद्ध के पश्चात लंका का राज्य उसके भाई विभीषण को दे दिया गया। बालि का वध कर उसके भाई सुग्रीव को सौंप दिया। वैदिक संस्कृति साम्राज्यवादी कभी नहीं रही। पीड़ियों की रक्षा कर हटाना पुनीत कर्त्तव्य माना गया है। इसी तारातम्य में हम यहाँ के किसी के संबध में पाठकों को एक नई वैचारिक सामग्री प्रस्तुत कर रहे है जो कि महत्वपूर्ण है।

वस्तुतः राजा दशरथ की तीनों रानियों में से कैकयी विशेष प्रतिभशाली थी। वह न केवल कौशलमय अपितु सम्पूर्ण भारत को

रक्ष-संस्कृति से रहित, एक सर्व प्रभुत्व सम्पन्न बनाना चाहती थी। इतना ही नहीं 'वह 'आर्यावर्त' को समुन्नत और गौरवपूर्ण राष्ट्र का रूप देना चाहती थी। कैकयी की राष्ट्र योजना-वह राजा दशरथ की राज्य क्षमता और बुद्धि से परिचित थी। वे रावण तथा बालि से भयभीत रहते थे। उनके राज्य का भविष्य अंधकामय था। कैकेयी कौसल राज्य को सुदृढ़, शुभ-रहित, उन्नति शील तथा सबल बनाना चाहती थी। मुझे राम से अनेक आशाएं थी विश्वामित्र के आश्रमों में उन्होंने अखंड सबल राष्ट्र, शत्रुओं से रहित राष्ट्र तथा बाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा वाला राज्य सुखी प्रजा तथा वैदिक संस्कृति पर आधारित राज्य व्यवस्था स्थापित करने की शिक्षा दी गई थी। ऋषि विश्वामित्र ने उन्हें युद्ध करने की विविध कलाओं से प्रशिक्षित कर दिया था। राम स्वयं ब्रह्म और क्षत्रिय शक्ति के समुन्नय के घोर प्रशंसक थे। त्याग, परिश्रम, तप के पश्चात ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

महारानी कैकेयी ने 'राम' के सम्मुख सारी स्थितियां बुद्धि मानी सहित प्रस्तुत कर दी थी। राम को तो केवल उनका अभिनय करना था। वे सफल हुए। क्या दशरथ परिवार में कैकेयी एक पहेली थी?

राजा दशरथ तथा राम से संबंधित साहित्य को तटस्थ भाव से पढ़कर चिन्तन करें तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि कैकेयी एक ऐसे परिवार अश्वपति की पुत्री थी, जहां राजकुमारों तथा राज कुमारियों को धर्म, नीति, शुद्ध कला-कौशल तथा रण क्षेत्र में भी उपकार शुद्ध करने की विद्या सिखाई जाती थी। राजा दशरथ से विवाह होने के पश्चात उसे अपने पति के राज्य की रक्षा, उन्नति एवं प्रजा को सुखी बनाने की चिन्ता सदैव बनी रहती थी। वह चारों राज कुमारों, को किशोरावस्था से क्षात्र-धर्म की शिक्षा देना चाहती थी। इसके लिए वह स्वयं कई-कई बार अयोध्या के निकट खुले मैदानों में अस्त्र-शस्त्र-विद्या सिखाती थी। रघुकुल में इसका निषेध था। उन दिनों अयोध्या चारों ओर से राजाओं, वनचरों, हत्यारों तथा वैदिक संस्कृति के विरोधी राक्षसों से घिरा हुआ था। सुदूर दक्षिण में बालि उनका विरोधी थी। उसके ही सहयोग से लंका नरेश रावण की सेनाएं गोदावरी आदि के निकट तक आ पहुंची थी। वनों में निवास कर रहे ऋषि मुनियों के स्वाध्याय, तप तथा यज्ञादि कार्यों राक्षस संस्कृति मानने वाले राक्षस नष्ट कर देते थे। राक्षसों से त्रस्त-ऋषि मुनि राजा-दशरथ से उनकी सभा हेतु आर्त-भाव से निवेदन कर रहे थे। ऐसे गंभीर समय में राजा दशरथ ने कुल गुरु वशिष्ठ जी को सादर आमंत्रित किया। गुरु वशिष्ठ स्वयं राजा के निमन्त्रण की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा का निमत्रण प्राप्त होते ही गुरु वशिष्ठ ने भी ऋषियों के कष्टों तथा राक्षासों के उपद्रव तथा अयोध्या राज्य की सीमा की रक्षा के लिए चिंता प्रकट की। कुल गुरु वशिष्ठ जी ने राजा से उनके दो किशोर राजकुमारों राम और लक्ष्मण को साथ ले जाने, प्रशिक्षित करने तथा राक्षसों से राज्य-सीमा सुरक्षित करने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने विश्वामित्र को सादर आमंत्रण भिजवाया। वे चारों राजकुमार को वन में सैन्य शिक्षा हेतु ले गये।

कैकेयी एक पहेली- नीति के अन्तर्गत राम को वन गमन कराने में उसकी एक दूरदर्शीकीर्ति, अयोध्याराज्य की बाहरी शत्रुओं से रक्षा तथा कालान्तर में राम को राजा बनाकर वैदिक राजनीति के सिध्दान्तानुसार अखंड तथा सर्व प्रभुत्व सम्पन्न राज्य स्थापित करना था। भला, क्या यह चिंतन दोषपूर्ण था? नहीं।

मानवीय मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के शुक्ल और कृष्ण पक्ष होते हैं। हमारे मन की यह दुर्बलता है कि हम सदैव शुक्ल की अपेक्षा कृष्ण पक्ष पर विचार कर केवल उस पर दृढ़ हो जाते हैं। मंथरा, कैकेयी आदि के चरित्र-चित्रण पर तटस्थ रहकर विचार करने की आवश्यकता है। राम की अपेक्षा भरत को अयोध्या की बागडोर सौंप देने पर क्या। राम राज्य में दिखाई पड़ने वाली विशेषताएं आज पढ़ने को मिल सकती थी? कैकेयी तो 'भरत' को केवल प्रतीक रूप में राजा बनाने का प्रस्ताव रखा था। यदि भरत राजगद्दी पर आसीन भी हो जाते तो राज्य की सभी व्यवस्था के पृष्ठ भाग में रहकर कैकेयी ही, संभालती। महारानी, कौशल्या और सुमित्रा सो राजमहल की शोभा थी, जिसमें कौशल्या का गुण, कर्म और स्वमाव प्रेय की अपेक्षा श्रेय भाव की ओर ही अधिक था जिसका वर्णन उन्होंने विवाह के पूर्व दशरथ को दिया था। सुमित्रा भी एक आदर्श आर्य पत्नी थी।

- इन्दौर, म.प्र.

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

वाल्मीकि-रामायण में वैदिक वर्णव्यवस्था

❐ डॉ. वेद प्रकाश वेदालंकार विद्यावाचस्पति

वाल्मीकि रामायण भारत का राष्ट्रीय आदिकाव्य है। वैदिक वर्णव्यवस्था का स्वर्णयुग इसमें प्रतिबिम्बित है। वेदों तथा समस्त वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन से परिज्ञात होता है कि, वैदिक काल में वर्णव्यवस्था का स्वरूप अपने शुद्धतम रूप में विद्यमान थी। वर्णव्यवस्था के माध्यम से उसके विभाजक तत्त्व जनता को विभक्त नहीं करते थे। उस युग में वर्गजात का कोई प्रश्न नहीं था। यही कारण है कि ऋग्वेद (10.191/3.4) आदेश देता है कि तुम्हारी मंत्रणा में, समितियों में विचारों और चिन्तन में समानता हो, सद्भावना हो, वैषम्य या दुर्भावना न हो-

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥
समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

समष्टि भावना से युक्त होकर वैदिक ऋषि अपने अपने नियत कर्तव्य-पालन पर बल देते रहे हैं-यजुर्वेद में उल्लेख आता है-

ब्रह्मणे ब्रह्मणं क्षत्राय राजन्यं, मरूद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रम्। (यजुर्वेद 30.5) यहाँ ब्रह्म-कृत्यों के लिए ब्राह्मण, राजकृत्यों के लिए क्षत्रिय, व्यापार-कृषिकर्म के लिए वैश्य और सेवा तथा तपस्या के लिए शूद्र को माना गया है। जब ये सभी वर्ण मिलकर, अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं, तभी सम्पूर्ण उन्नति सम्भव है। यजुर्वेद में कहा है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च उभौ संचरतः सह।
तं देशं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

इन वैदिक मन्त्रों में सभी वर्णों की सहचारिता और सामंजस्य को राष्ट्रोन्नति मूलक माना गया है। वेद के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में ही प्रजाओं के हित सम्पादक के लिए एक शाश्वत मर्यादा का प्रादुर्भाव स्वयं भगवान् प्रजापति ने किया। जैसे हमारे शरीर में मुख, बाहु-ऊरु और पैर ये चार प्रमुख अंग हैं, वैसे ही समाज रूपी शरीर के निर्वहन के लिए चार वर्ण-अंग विशेष हैं। इन चार वर्णों में वेद ने विद्या के अध्ययन-अध्यापन में कुशल ज्ञान-विज्ञान के प्रसारक, धर्मशास्त्र के प्रवर्तक, राज्य नियमों के व्यवस्थापक, विधिविधान के ज्ञाता, ब्रह्मतेज सम्पन्न, राष्ट्रनीति के निर्धारक तथा प्रजा के प्रणेता को -'ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्' कथन द्वारा ब्राह्मण की संज्ञा दी है।

राष्ट्र रक्षा के व्रती, राज्यपाल, राष्ट्रपति, सकलशास्त्रों के पारंगत, शास्त्रस्त्र विद्यानिपुण, वीर, शासक, न्यायाधीश, नीति कुशल, राष्ट्रनीति संचालक, लोक रक्षक को बाहू राजन्यः कृतः कहकर 'क्षत्रिय' माना है। व्यापार वृत्ति में निपुण, आर्य शास्त्र के पण्डित, धनोत्पादन में कुशल, कृषि विशेषज्ञ, खनिज शास्त्र पारंगत, राष्ट्रसंपत्ति वर्धक, दानशील, शिल्पकला निष्णात, समस्त शास्त्रस्त्र निर्माता, धनधान्य सम्पन्न, राष्ट्रहित में सम्पत्ति समर्पित करने वाले उद्यमशील वैश्य को ''ऊरूतदस्य यद् वैश्यः इस सम्बोधन से अभिहित किया है।

अनवरत गतिशील, सेवापरायण, शक्ति भक्ति सम्पन्न, स्वामीभक्ति, विनम्र, भारधारक गुणों वाले शूद्र को=पद्भ्यां शूद्रोऽजायत' कहा है। ऋषि दयानन्द जी ने शूद्र का अर्थ इस प्रकार किया है-जो विद्याहीन, जिसको पढ़ने से भी विद्या न आ सके, शरीर से पुष्ट, सेवा में कुशल हो वह शूद्र। (संस्कार विधि गृहस्था श्रम प्रकरण) अथवा जो मूर्खादि गुणवाला हो वह शूद्र है। (सत्यार्थ प्रकाश-चतुर्थ समुल्लास)।

इस वैदिक वर्णव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुण-कर्म-स्वभाव रूचि के अनुसार अपने वर्ण को चुनने की व्यवस्था है-वर्णोः वृणोतेः (निरूक्त 2/3), वह तदनुसार कर्त्तव्य का पालन करता है। इसी तथ्य को गीता में **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः** द्वारा पुष्ट किया गया है। (गीता अध्याय 4.9 लोक 13) वैदिक वर्ण व्यवस्था में लचीलापन है। सभी-वर्ण अपनी अपनी जगह पर खूँटे की तरह गड़े हुवे नहीं हैं। कोई भी वर्ण नीचे से ऊपर उठ सकता है, और इसके विपरीत किसी भी उच्च कहे जाने वाले वर्ण का पतन भी हो सकता है। आचार को प्रथम मानकर वेदों ने प्रत्येक वर्ण (व्यक्ति) को ऊपर उठने की पूरी स्वतन्त्रता दी है-

''आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्'' (अथर्ववेद 3.30. 7) ब्राह्मण सदा ब्राह्मण ही बना रहे और शूद्र सदा शूद्र ही बना रहे-ऐसा कठोर बन्धन वैदिक नहीं है। ब्राह्मण वर्ग के प्रति उदारता और शूद्र वर्ण के प्रति निर्ममता वैदिक वर्ण व्यवस्था का अंग नहीं थी।

इस व्यवस्था में राज्यशासन की प्रभुता क्षत्रियों के हाथ में रहती थी और वे राजनीति के ज्ञाता ब्राह्मणों के निर्देश पर अपनी प्रभुता शक्ति का प्रयोग करते थे। वैश्य जन ब्राह्मणों से ज्ञान सीखकर तथा क्षत्रियों की रक्षा में रहकर, भौतिक सम्पत्ति को पैदा करने थे। शूद्र इन तीनों वर्णों की सेवा में तत्पर रहते थे। ब्राह्मणों का ज्ञान, क्षत्रियों की शक्ति, और वैश्यों की सम्पत्ति राष्ट्रहित में खर्च होती थी। सभी वर्ण स्वयं को राष्ट्र का न्यासरक्षक (ट्रस्टी) समझते थे। (मेराध र्म आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पृष्ठ 82)

वैदिक वर्णव्यवस्था की यह मर्यादा वाल्मीकि रामायण में प्रतिपद परिलक्षित होती है। इसके परिक्षण और स्थिरीकरण के प्रति वाल्मीकि-रामायण में अत्यन्त कठोर नियम थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि तत्कालीन समाज एक ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था पर आधारित था जो वेदसम्मत था। महाराजा दशरथ एवं श्रीरामचन्द्र स्वयं वेद वेदांगों के ज्ञाता थे।

तस्यां पुर्यामयोध्यायां वेदवित् सर्वसंग्रहः।
दीर्घदर्शी महातेजाः पौरजानपद प्रियः॥
यथा मनु महि तेजा तेजा लोकस्य परिरक्षिता।
तथा दशरथो राजा लोकस्य परिरक्षिता॥

(बालकाण्ड सर्व. 6, श्लोक 1.4)

श्रीरामचन्द्र जी के विषय में कथन है-

रधिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य रक्षिता।
वेद वेदांग तत्त्वज्ञो धनुर्वेद च निष्ठितः॥

(बालकाण्ड सर्ग-1, श्लोक 4)

यजुर्वेद विनीत वेदविद्भिः सुपूजितः।
धनुर्वेद च वेदे च वेदांगेषु च निष्ठितः॥

(सुन्दरकाण्ड, स्वर्ग 35, श्लोक 14)

श्री राम का राज्य अभिषेक, वेदपाठी वशिष्ठ आदि महर्षियों ने ही सम्पन्न कराया था-जिसमें सभी वर्ण हर्षित होकर सम्मिलित हुए थे।

ऋत्विग्भिः ब्राह्मणैः पूर्व कन्याभिः मं त्रिभिस्तथा।
यौधैश्चैवाम्यर्षिच स्तेसंप्रद दृष्टैः स नैगमैः।

प्रथम ऋत्विक ब्राह्मणों ने उसक पीछे कन्याओं ने फिर मंत्री, योद्धागण, पुरवासी और वैश्यों ने हर्षित मन से श्रीराम चन्द्र जी का

अभिषेक किया। इसी प्रकार राम के ही राज्याभिषेक हेतु उसके गुण वर्णन में वाल्मीकि लिखते हैं-

बहुश्रुतानां वृद्धानां ब्राह्मणानामुपासिता।
तेनास्येहाऽतुला कीर्तिर्यशश्चस्तेजश्चवर्धते॥
देवासुर मनुष्याणां सर्वशास्त्रेषु विशारदः।
सम्यक् विद्याव्रत स्नातो यथावत् सांगवेदवित्॥

(अयोध्याकाण्ड सर्ग-2, श्लोक 33.34)

स्वामिभक्त हनुमान भी वेदनिष्णात थे। सुग्रीव के मन्त्री हनुमान के विषय में श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं-

नानृग्वेद विनीतस्य नायजुर्वेद धारिणः।
नसामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्॥

(किष्किधाकाण्ड, सर्ग-1, श्लोक 28)

रामायण का जनसामान्य वेदानुकूल वर्णों और आश्रमों में विभक्त होता हुआ सहयोग और सौहार्द के तन्तुओं से परस्पर अनुस्यूत था। इसमें ब्राह्मणों को बौद्धिक एवं आध्यात्मिक योग्यता के कारण असाधारण सम्मान एवं विशेषाधिकार प्राप्त थे। क्षत्रिय उनका वर्चस्व स्वीकार करते थे। वे नीति-परम्परा के अनुसार राष्ट्र का संचालन करते थे। वेद का यह राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र-**ओं आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायताम्''।** उस काल में पूर्ण चरितार्थ था। वैश्य वाणिज्य व्यापार द्वारा राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान करने और शूद्र अन्य वर्णों की सेवा में लगे रहते थे।

वर्गेष्वभ्रय चतुर्थेषु देवतातिथि पूजकरः।
कृतज्ञाश्च वदान्याश्च शूराः विक्रम संयुताः॥

(बालकाण्ड सर्ग 6.9 श्लोक 17)

ब्राह्मणादि चारों वर्ण देवता और अतिथि की पूजा करते थे, सभी कृतज्ञ दाता और शूर थे।

क्षर्ण ब्रह्ममुखं चासीद् वैश्याः थगमनुव्रताः।
शूद्राः स्वकर्मनिरताः गीन वर्णानुपचारिणः॥

(बाल. सर्ग-6, श्लोक 19)

श्रीराम स्वयं धर्मचारिणी शूद्रा शबरी को मिलने उनके पास जाते हैं-

सोऽभ्यगच्छत् महातेजाः शबरी शत्रुसूदनः।
शबर्या पूजितःसम्यक् रामो दशरथात्मजः॥

(बाल. सर्ग-1, श्लोक 57)

महाराजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में भी सभी वर्णों को समान-सम्मान के साथ आमन्त्रित किया गया-

ततः सुमन्त्रमाहूय वसिष्ठो वाक्य मब्रवीत्।
निमन्त्रयस्व नृपतीन पृथिव्यां ये च धार्मिकाः॥
ब्राह्मणान् अगिर्यन वैश्या न शूद्रांश्यैव सहसग्रशः॥

(बाल. सर्ग-13, श्लोक 20)

ततो वाष्ठि प्रमुखाः सर्व एव द्विजोत्तमाः।
ऋष्यश्रृंगं पुरस्कृत्य यज्ञकर्मारऽमनतदा॥

(वही, श्लोक 41)

तत्कालीन ब्राह्मणवर्ण धन वैभ्ज्ञव का आकांक्षी नहीं था। राजा दशरथ द्वारा ऋषियों को दान में दी गई पृथ्वी को वे स्वीकार नहीं करते हैं। महाराज दशरथ से कहते हैं-

भानेव महीं कृत्स्नामेको रक्षितुमर्हति।
न भूम्या काम्यमस्माकं न हि शक्ताः स्म पालने॥

(बालकाण्ड, सर्ग-13, श्लोक 47)

अर्थात् हे राजेन्द्र नाथ आप एकाकी इस समस्त भूमण्डल की रक्षा करने योग्य है, हमें पृथ्वी नहीं चाहिए। क्योंकि हम इसके पालन करने में असमर्थ हैं। रामायणकालीन वर्णव्यवस्था का उद्देश्य समाज के विकास के लिए एक ऐसे वातावरण की सृष्टि करना था, जिसमें सभी वर्ण सामाजिक संगठन में रहकर, अपने विहित कर्मों का यथायोग्य निर्वाह कर सकें और उपलब्ध साधनों द्वारा अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें तथा जीवन में सफलता उपलब्ध कर सकें। दशरथ के पुत्रष्टि यज्ञ में एक परिवार की तरह सभी वर्ण यहभोग करते हैं और सामाजिक सौहार्द का परिचय देते हैं। भरत जब राम को अयोध्या नगरी लौटने के लिए दण्डकारण्य में जाते हैं, तो अयोध्या में रहने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णो के व्यक्ति उनके साथ जाने को उद्यत होते हैं। दण्डकारण्य में ही राम राजकुमार भरत से राज्य शासन के विषय में पूछते हुए, चारों वर्णो के लोगों की कुशल क्षेत्र जानना चाहते हैं-

ब्राह्मणैः क्षत्रियैवैश्यैः स्वकर्मनिरतैः सदा।
जितेन्द्रियैः महोत्सा हैः वृतामार्यैः सहस्रशः॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 100 श्लोक 41)

इन उच्चारणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वाल्मीकि-रामायण में सामाजिक जीवन की मूलआधार शिक्षा वैदिक वर्ण व्यवस्था ही थी। समाज में यही धारणा थी कि ईश्वर ने सभी को समान रूप से उत्पन्न किया है- **सर्वे अमृतस्यपुत्राः।** अपने कर्मों एवं गुणों के अनुसार ही लोग विभिन्न जातियों में विभक्त हैं। वस्तुतः रामायण में सिद्धान्त रूप से जातिपाति काभेदभाव नहीं था-परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से जाति के बन्धन कठोर थे। तदुपरान्त भी समाज में प्रत्येक वर्ण के व्यक्ति का उचित सम्मान होता था-कहीं भी छूत-छात का भेदभाव नहीं था।

इस वेदानुकूल वर्णव्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान सर्वप्रथम था। ब्राह्मण माता-पिता से उत्पन्न अथवा विद्वान ब्राह्मणों के विहित कर्म करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण कहा जाता था। विश्वामित्र ने जन्मना क्षत्रिय होते हुए भी-ब्राह्मण विहित कर्म करने के कारण, घोर तपस्या द्वारा ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लिया था-स्वयं ब्रह्म का विश्वामित्र को यह कथन है-

ब्रह्मर्षित्वं न सन्देहः सर्व सम्पद्यते तव।
इत्युक्त्वा देवताश्चापि सर्वाऽजग्मु यर्थागतम्॥
विश्वामित्रोऽपिधर्मात्मा लब्ध्वा ब्राह्मणयमुत्तमम्॥
पूजयामास ब्रह्मषि वसिष्ठं जयतां वरम्॥

(बालकाण्ड सर्व 65, श्लोक 26,27)

ब्राह्मणों की आज्ञा के विरूद्ध राजा भी कर्म नहीं कर सकता था। राजा दशरथ ने अपने पुत्रेष्टि यज्ञ में समुन्त्र के द्वारा सुयज्ञ, वामदेव, जाबलि, कश्यप, वसिष्ठ आदि ब्राह्मणों को बुलाया तथा उनके उपस्थित होने पर, सभी ब्राह्मणों का देवता के समान पूजन किया तथा उनकी आज्ञा के अनुसार ही यज्ञ सम्पन्न किया।

सीता के शपथ समारोह में भी श्रीरामचन्द्र जी ने चातुर्वेध सहित ब्राह्मणों को आमन्त्रित करके उनको विशेष सम्मान दिया। जन्मना क्षत्रिय विश्वामित्र भी वसिष्ठ (ब्राह्मण) से पराजित हो जाने के पश्चात् ब्राह्मण को क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र से अधिक बलशाली मानते हुए कहते हैं-

धिग् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलम् बलम्।
एकेने ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे॥

(शेष पृष्ठ 14 पर)

આદ્ય ધર્મગ્રન્થ વેદોનો હિન્દીમાં પ્રચાર કરવા વાળી અપૂર્વ સંસ્થા આર્યસમાજ

ધાર્મિક અને સામાજિક સંસ્થા આર્યસમાજની સ્થાપના સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતીએ 10 એપ્રિલ 1875માં મુમ્બઈમાં કરી હતી. સ્વામીજીની માતૃભાષા ગુજરાતી હતી. આર્યસમાજ એક ધાર્મિક અને સામાજિક સંગઠન અને આંદોલન છે. જેનો ઉદ્દેશ્ય ધર્મ અને સમાજ તેમજ રાજનીતિ ક્ષેત્રમાંથી અસત્યને દૂર કરીને તેના સ્થાને સત્યને સ્થાપિત કરવાનો છે. શું ધર્મ, સમાજ અને રાજનીતિ આદિમા અસત્યનો વ્યવહાર થાય છે? એનો જવાબ હામાં છે. ધર્મના ક્ષેત્રમાં અસત્યની વાત કરીએ તો સૃષ્ટિના આરંભમાં ઈશ્વર પ્રદત્ત વેદજ્ઞાનની ચર્ચા કરવા જરૂરી છે. સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિ પછી પહેલીવાર મનુષ્ય રૂપે યુવા સ્ત્રી-પુરુષની અમૈથુની ઉત્પત્તિ ઈશ્વરે કરી, તો એમને પોતાના દૈનન્દિન વ્યવહારો અને બોલચાલ માટે એક ભાષા સહિત કર્તવ્ય – અકર્તવ્યના જ્ઞાનની જરૂરિયાત હતી. એ આવશ્યક જ્ઞાન "વેદ"ના રૂપમાં ઈશ્વરે મનુષ્યોની પ્રથમ પેઢીને આપ્યું જેથી તેઓ પોતાના સમસ્ત કર્તવ્ય-વ્યવહાર આદિને જાણી શકે. આમ સૃષ્ટિના આરંભમાં મનુષ્યોત્પત્તિની સાથે જ વૈદિક ધર્મની સ્થાપના સ્વયં પરમાત્માએ ચાર ઋષિ અગ્નિ, વાયુ, આદિત્ય અને અંગિરાને વેદજ્ઞાન આપીને કરી હતી. એ નિર્વિવાદ છે કે સૃષ્ટિના આરંભથી મહાભારતના સમય સુધી લગભગ 1 અબજ 96 કરોડ 8 લાખ વર્ષો સુધી સમ્પૂર્ણ ભૂમંડળ પર વેદ અને વૈદિક ધર્મનું જ આધિપત્ય હતું. જે જ્ઞાન અને વિજ્ઞાનની કસોટી પર પૂર્ણ સત્ય અને તર્ક સંગત હતું. મહાભારતના યુદ્ધમાં થયેલ જાન-માલની મોટીક્ષતિને કારણે દેશમાં અધ્યાપન અને અધ્યયનનું સંપૂર્ણ માળખું ધ્વસ્ત થઈ ગયું હતું. જોકે ધર્મ તો વૈદિક જ રહ્યો હતો પરન્તુ વૈદિક સાહિત્યના અધ્યયન-અધ્યાપનની સમુચિત વ્યવસ્થા ન હોવાને કારણે અજ્ઞાન, અન્ધવિશ્વાસ, કુરિવાજો, સામાજિક અસમાનતાઓ-વિષમતાઓ જેવા અનેક પાખંડોની સંસ્કૃતિ અને સભ્યતામાં આવી ગયા હતા. અજ્ઞાનને કારણે સ્વાર્થે પણ માથું ઉચક્યું અને ગુણ, કર્મ અને સ્વભાવ પર આધારિત વૈદિક વર્ણ વ્યવસ્થાનું સ્થાન જન્મના જાતિ વ્યવસ્થાએ લઈ લીધું. વર્ણ વ્યવસ્થામાં બ્રાહ્મણને શિખર તથા શૂદ્રને નિમ્ન સ્થાન પર મૂકી દીધા. ત્યાં સુધી કહી નાખ્યું કે બ્રાહ્મણે કહેલી પ્રત્યેક વાત બાકીના દરેક વર્ણે માનવી જ પડશે. એનો અર્થ એ હતો કે જ્ઞાની કે અજ્ઞાની બ્રાહ્મણ કોઈ અનુચિત વાત કહે, તો પણ બાકીના બધા લોકોએ વગર વિચાર્યે એનો સ્વીકાર કરવો જ પડશે. આ એવી જ રીતે હતું કે અત્યારે જેવી રીતે કેટલાક સમ્પ્રદાયોમાં વર્ણ વ્યવસ્થા છે, જે પ્રમાણે ધર્મમાં અક્કલની દખલ ન થાય. આજ કારણો થી વૈદિકધર્મ અનેક અન્ધવિશ્વાસોમાં ડૂબેલો રહ્યો.

સંસારમાં વૈદિક ધર્મ પછી ભારતની બહાર બીજા જે મત અસ્તિત્વમાં આવ્યા તે પારસી મતના નામે પ્રસિદ્ધ છે. ત્યાર બાદ ભારતમાં બૌદ્ધ અને જૈમ મતોનો પ્રાદુર્ભાવ થયો અને કાળાન્તરે ભારતથી સુદૂર દેશોમાં ઇસાઈ અને ઇસ્લામ મતનો પ્રાદુર્ભાવ થયો. આ બધા મતોની ભાષા સંસ્કૃતથી ભિન્ન પારસી, પાલી, હિબ્રૂ, અરબી આદિ હતી. ત્યાર પછી ભારતમાં સિખ મતની સ્થાપના થઈ, જેનો ધર્મ ગ્રન્થ ગુરૂ ગ્રન્થ સાહેબ ગુરૂમુખી ભાષામાં છે. આમ ઇ. સ. 1875 સુધીમા અસ્તિત્વમાં આવેલા કોઈપણ મત કે સમ્પ્રદાયના ધર્મગ્રન્થની ભાષા હિન્દી નહોતી. મહર્ષિ દયાનન્દ વિશ્વ ઇતિહાસમાં પહેલા મહાપુરુષ હતા કે જેમણે વૈદિકધર્મના વિકારો અને અન્ધવિશ્વાસોમાં સુધારણા માટે યુક્તિઓ અને તર્કથી વૈદિક ધર્મના યથાર્થ સ્વરૂપને પોતાના સત્યાર્થપ્રકાશ ગ્રન્થમાં પ્રસ્તુત કર્યું છે. આ સત્યાર્થપ્રકાશ ગ્રન્થ આર્યસમાજના અનુયાયિના ધર્મગ્રન્થ વેદના વ્યાખ્યા ગ્રન્થ સમાન છે. સત્યાર્થપ્રકાશ વિશ્વનો પહેલો ધર્મગ્રન્થ છે જે હિન્દીમાં છે તથા જેને મહર્ષિ દયાનન્દે આર્યભાષા અર્થાત્ આર્યોની ભાષા નામ આપ્યું.

સત્યાર્થપ્રકાશ ગ્રન્થની પ્રથમ રચના ઇ.સ. 1874ની ઉત્તરાર્ધમાં કાશીમાં મહર્ષિ દયાનન્દજીએ કરી હતી. 1883માં એનું નવું સંશોધિત સંસ્કરણ તૈયાર કરવામાં આવ્યું જેનું પ્રકાશન 1884માં થયું. આજ સંસ્કરણ આજે આર્યોના ધર્મગ્રન્થ તરીકે આખાય વિશ્વમાં પ્રસિદ્ધ છે. આ ગ્રન્થ ક્રાન્તિકારી છે. એનો એવો પ્રભાવ પડ્યો છે કે મોટી સંખ્યામાં પૌરાણિક માન્યતા પ્રધાન સનાતન ધર્મના અનુયાયિઓએ એની સાથે સહમત થઈને સ્વીકાર કર્યો છે. માત્ર પૌરાણિકોએ જ નહીં મોટાભાગના બધા જ મતોના અનુયાયિઓએ સમય સમયે વૈદિકધર્મનો સ્વીકાર કર્યો છે. એનું કારણ વૈદિકધર્મની અન્ય મતો કરતા જુદી પણ શ્રેષ્ઠ, યુક્તિસંગત અને સર્વહિતકારી માન્યતાઓ છે.

समाचार दर्पण

निमन्त्रण
आर्यसमाज नोएडा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव 11,12, 13, 14 व 15 दिसम्बर 2019 को मनाया जा रहा है। जिसमें पारायण यज्ञ, वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन, सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, राष्ट्रभक्ति एवं क्रान्तिकारी गीतों का कार्यक्रम, 101 कुण्डीय विश्वशान्ति सौहार्द महायज्ञ, गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन आयोजित किये जायेगे। सभी से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अपनी डायरी में अंकित कर लें व अपना कोई कार्यक्रम न बनायें।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 16.11.2019 (शुक्रवार) से 24.11.2019 (रविवार) तक
स्थान: दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर, रोहतक

16 नवम्बर सायं काल से 24 नवम्बर 2019 तक क्रियात्मक रूप से ध्यान-योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर के मुख्य प्रशिक्षक: पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती, स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, आचार्य दिनेश जी, आचार्य प्रियेश जी आदि।

आवासीय शिविरार्थी 16 नवम्बर सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। शिविर तथा वार्षिक उत्सव का समापन 24 नवम्बर को मध्याह्न लगभग 1 बजे तक होगा।

दर्शन योग महाविद्यालय:- महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, जलेबी रोड, जींद बाइपास के पास, सुन्दरपुर, रोहतक-124001 (हरियाणा)
मो. 7027026175, 7027026176, 7027026175
E-mail: darshanyogsundarpur@gmail.com

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल में रक्षा बन्धन पर्व आयोजित

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा रक्षा बंधन का का पर्व 15 अगस्त 2019 को गुरुकुल में बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया।

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

अध्यात्म पथ (पंजी) मासिक पत्रिका द्वारा देश धर्म पर बलिदान देने वाले वीरों की याद में राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, का भव्य आयोजन आर्यसमाज पश्चिम विहार में किय गया। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने वीर शहीदों के अभूतपूर्व त्याग बलिदान को याद किया। इस समारोह में आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी धर्ममुनि जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्ति पत्र, सम्मान राशि एवं शाल भेंट की। **अध्यात्म रत्न सम्मान से प्रि. शालिनी अरोरा, प्रधानाचार्य डी.ए.वी. स्कूल विकासपुरी को सम्मानित किया गया।** आप आर्य परिवार से सम्बन्धित है। अतिथि सम्पादक श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं प्रबंध सम्पादक श्री अश्विनी नांगिया ने सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यवाद किया। अन्त में अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता स्वामी धर्ममुनि जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। भव्य ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पं. दिनेश आर्य 'पथिक'
सुपुत्र पं. सत्यपाल 'पथिक'

वर्तमान में अमृतसर से पूर्ण रूप से नोएडा में उपलब्ध, अपनी आर्य समाज/शिक्षण संस्थान में वार्षिकोत्सव साप्ताहिक सत्संग एवम् प्रार्थना सभा (क्रिया/ उठाला) हेतु प्रेरणादायक भक्ति संगीत के लिए सम्पर्क करें- मो. 9872955841, 8368556770, 9855098530

गौ–दान : महा–दान

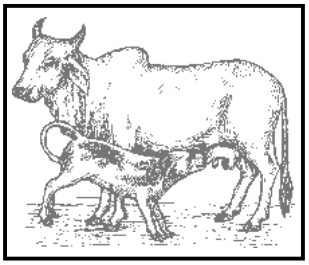

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 10 का शेष)

अर्थात क्षत्रिय बल को धिक्कार है। ब्रह्मतेज से प्राप्त होने वाला बल ही वास्तव में बल है। क्योंकि आज एक ब्रह्मदण्ड ने मेरे भी अस्त्र नष्ट कर दिये।

ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय का स्थान था। क्षत्रिय शासक वेदानुकूल चारों वर्णों का पालन करता था। भरत का राम के प्रति यह कथन द्रष्टव्य है-

क्व चारण्यं क्व च क्षत्रं क्व जटाः क्व च पालनम।
ईदृशं व्याहतं कर्म न भवान् कर्तुमर्हसि॥
एष हि प्रथमो धर्मः क्षत्रियस्या भषेचनम्।
येन शक्यं महाप्राज्ञः प्रजानां परिपालनम्॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग-106, श्लोक 19-20)

अर्थात यदि शरीर को ही कष्ट देने वाले धर्म को ही करने की आपकी बड़ी इच्छा है तो धर्मानुसार ब्राह्मणादि चारों वर्णों के पालन करने का कष्ट आप भोगिये। कहाँ क्षत्रियधर्म और कहाँ जनशून्य वन? कहाँ प्रजापालन और कहां जटाधारण? ऐसे परस्पर विरोधी कार्य आपको नहीं करने चाहिए। क्षत्रिय यदि अपने धर्म का पालन नहीं करता, वह पाप का भागी बनता है और नरकगामी बनता है। राम ने बाली को मारने का यही कारण दिया था। क्षत्रिय धर्म की पालना करते हुए ही श्रीराम परशुराम के क्रोधित होने पर ही अपना पराक्रम प्रदर्शित करते हैं। रामायण के इन प्रसंगों से स्पष्ट है कि वाल्मीकि ने वेद का ही अनुसरण किया हैं। ब्राह्मण के ही समान क्षत्रिय को जितेन्द्रिय, पराक्रमी, यज्ञशील, गुणवान, विद्यावान बनकर धर्मपूर्वक राज्य की धुरा को धारण करना पड़ता था। बूढ़े होने पर दशरथ का कथन है-

राज प्रभाव जुष्टां च दुर्वहामजितेन्द्रियैः।
परिश्रान्त्रोस्मि लोकस्य गुर्वो धर्मधुरं वहन॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 2, श्लोक 1)

अर्थात् अजितेन्द्रिय जिस भार को नहीं उठा सकते, मैं राज प्रभा-वानुसार वही गुरुतर धर्मभार वहन करके थक गया हूँ। इस गुरुतर भार को वे अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को सौंपने की अनुमति ऋषियों को देते हैं, जो कि राज्य भार वहन करने में पूर्ण सक्षम और योग्य हैं।

कर्मान्तिकान् वर्धिकनः कोषाध्यक्षांश्च नैगमान्।

(उत्तराकाण्ड सर्ग 91, श्लोक 24)

अर्थात् कार्याध्यक्ष, शास्त्रज्ञ, कोषाध्यक्ष और सेवक सब भरत के साथ अश्वमेघ यज्ञ में चलें। आदि कवि वाल्मीकि ने शूद्रों को भी सेवाकर्म ही कर्तव्य कर्म निर्दिष्ट किया है।

शूद्राः स्वकर्म निरताः जीन् वर्णानुपचारिणः।

(बालकाण्ड, सर्व 6, श्लोक 19)

निषाद राज गुह का राम को कथन है-

वयं प्रेष्या भवान्मर्ता साधुराज्यं प्रशाधि नः।
भक्ष्यं भोज्यं च पेयं लेहयं् चैतदुपस्थितम्॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 101, श्लोक 39)

युद्धकाण्ड में मृत्य-सेवक के धर्मप्रतिपादन में सेवा-कर्म को प्रमुखता दी गई है-

यो हि मृत्यो नियुक्तः सन् मर्त्रा कर्माणि दुष्करे।
कुर्यातदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तम्॥
यो नियुक्तः परं कार्य न कुर्यात् नृपतेः प्रियम्।
मृत्यः युक्तः समर्थश्च तमाहुर्मध्यम् नरम्॥
नियुक्तों नृपतेः कार्य न कुर्याद यः समाहितः।
मृत्यः युक्तः समर्थश्च तमाहुः पुरुषाधमम्॥

(युद्धकाण्ड, सर्ग 1, श्लोक 7-9)

रावण भी सीता को उसकी पटरानी बन जाने पर दासियों का लालच देता है-

पञ्चदास्यः सद्स्रणि सर्वाभरण भूषिताः।
सीते परिचरिष्यन्ति भार्या भवसि मे यदि॥

(अख्यकाण्ड, सर्ग 47, श्लोक 31)

निष्कर्षः- वाल्मीकि रामायण में वर्ण व्यवस्था के प्रतिपादन से यही निष्कर्ष निकलता है कि आदि कवि पद पद वेद का अनुसरण करता है। उसमें प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पूर्णतः वेद के अनुकूल है, कहीं भी वेद के विरूद्ध वर्ण धर्म निरूपिन नहीं हुए हैं। इस युग में वेदों को पूर्ण रूप से धार्मिक महत्व प्राप्त था। राम आदि चारों राजकुमारों का विवाह संस्कार वरिष्ठ ने वैदिक रीति से ही सम्पन्न कराया-

ऋषीश्यापि महात्मानः सहभार्या रधूदवहाः।
यथोक्तेन ततश्चक्रः विवाहं विधिपूर्वकम्॥

(बालकाण्ड, सर्ग 73, श्लोक 36)

दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ भी अथर्व के मंगों से ही ऋष्यश्रृंग ऋषि ने पूर्ण किया-

इष्टिं ते करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणात्।
अथर्वशिसीस प्रोक्तैः मन्त्रैः सिद्धां विद्यानतः॥

(बालकाण्ड, सर्ग 15, श्लोक 2)

रावण को मारने के लिए राम ने अपना बाण वेदोक्त मत्र से अभिमन्त्रित करके धनुष पर चढ़ाया था-

अभिमन्त्रय ततो रामस्तं महेषुं महाबलः।
वेद प्रोक्तेन विधिना संदधे कार्मु के बली॥

(युद्धकाण्ड, सर्ग 110, श्लोक 14)

निःसन्देह वाल्मीकि रामायण में विभिन्न जातियों एवं वर्गों में बंटे हुए समाज को, जिस रहस्यमय भी शक्ति ने सुसंगठित रखा, उसके प्रकट विरोधों में समन्वय स्थापित किया। उसे सत्य, सदाचार और सरपरम्पराओं के मंच पर प्रतिष्ठापित किया, दृष्टिकोण की ऐसी समता और एकात्मता स्थापित कर दी, जिसके समक्ष समस्त वैभिन्य-विरोधाभास तिरोहित हो गये-यह थी-वेदःसम्मत वर्ण व्यवस्था, जिसके कारण रामायण कालीन युग को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव 2020

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य **ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार 20, 21, 22 फरवरी 2020** को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- मन्त्री ट्रस्ट रामनाथ सहगल

अर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा-2020

कार्यालयः आर्यावर्त केसरी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221, उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा दिनांक 18 से 25 फरवरी 2020 तक

प्रस्थानः 18 फरवरी 2020 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 14311 अप द्वारा। (17 फरवरी 2020 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद) वापसीः 25 फरवरी 2020 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हजरत एक्सप्रेस से।

परिभ्रमण कार्यक्रमः ❑ **सरदार वल्लभ भाई पटेल का विश्व प्रसिद्ध (सबसे ऊँचा) 600 फिट ऊँचा भव्य व ऐतिहासिक स्मारक**-सरदार सरोवर नर्मदा सागर, गुजरात। ❑ **द्वारिका**-चार धार्मों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा। ❑ **भेंट द्वारिका**- श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रूक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब आदि। ❑ **नागेश्वर महादेव**-द्वादश ज्योतिलिंग में से एक नागेश्वर महादेव। ❑ **भालका तीर्थ**-वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था। ❑ **सोमनाथ तीर्थ**-ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाईट एंड साउंड' का दिग्दर्शन। ❑ **ऋषि जन्मभूमि टंकारा**-महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

सहयोग राशिः प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी-प्रबंध समिति द्वारा होगी। इस यात्रा निमित **कुल धनराशि रूपये 5500/-** (**सीनियर सिटीजन** के लिए **रूपये 5000/-**) देव होगी, जिसमें से **रिजर्वेशन तथा बुकिंग** आदि व्यवस्थाओं के लिए **3500/-** की धनराशि **दिनांक 15 अक्टूबर 2019** तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित होगी। इसी प्रकार जो महानुभाव **AC III** या **AC II** में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। **वातानुकूलित श्रेणी AC II** के लिए कुल धनराशि **रूपये 7000/-** (**सीनियर सिटीजन** के लिए **6500/-**) तथा **वातानुकूलित श्रेणी AC III** के लिए कुल धनराशि **रूपये 7000/-** (**सीनियर सिटीजन** के लिए **रूपये 6500/-**) देय होगी, जिसमें से **रिजर्वेशन तथा बुकिंग** आदि व्यवस्थाओं के लिए **रूपये 5000/-** की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित होगी। यह धनराशि आपके द्वारा **'आर्यावर्त केसरी'** के **भारतीय स्टेट बैंक शाखा-अमरोहा** स्थित बचत **खाता संख्या-30404724002, IFSC Code SBIN0000610** में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनराशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयेग प्रार्थनीय है।

यात्रियों को आवश्यक निर्देशः- ❑ गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ❑ यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ❑ ओढ़ने बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ❑ अपनी औषधि साथ रखें। ❑ आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ❑ आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोटः 1. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। 2. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा सम्पन्न होगी। 3. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रूकना चाहते हों, तो उसकी सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह यथासम्भव उपलब्धता पर निर्भर रहेगा। कोटिशः धन्यवाद। आओ!

ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं....

डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं सम्पादक-आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कालोनी, निकट-मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मो. 09412139333, 8630822099

ईश्वर सदा अच्छे ही कर्म करता है।
परन्तु लोग अपनी अविद्या के कारण,
जीवन में होने वाले नुकसानों का कारण
ईश्वर को मानते हैं। यह गलत है।

टंकारा समाचार अक्टूबर 2019
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-10-2019
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.09.2019

आपका प्यार, आपका विश्वास
एमडीएच ने रचा इतिहास

1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक

MDH
मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न
पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित

विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे
भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।
The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।

MDH मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच

महाशय जी ने बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये व्यवसाय को समर्पित किया है। एक सर्वश्रेष्ठ उद्योगपति होने के साथ साथ वह न केवल एक परोपकारी व्यक्ति हैं बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के लिये ताकत और समर्थन का एक स्तम्भ भी हैं। एमडीएच एक कंपनी ही नहीं वह एक संस्था है एक विशाल परिवार है जोकि अपने सहयोग से 70 से अधिक सामाजिक संस्थाएं जैसे स्कूल, अस्पताल, गौशालाएँ, वृद्धाश्रम, अनाथालय, गरीब छात्रों, विधवाओं एवं गरीब परिवारों एवं आर्य समाज इत्यादि कई सामाजिक संगठनों की आर्थिक रूप से महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट और महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से मदद करते हैं।

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

मुद्रक व प्रकाशक–**रामनाथ सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**